🌺 माँ अन्नपूर्णा आरती (Aarti)

जय अन्नपूर्णे माता,

जय जगदम्बे माता।

रत्नजडित सिहासन पर,

बैठी हरिहर माता॥ जय…

शंख, चक्र, गदा, त्रिशूला,

धारण कर मूरत प्यारी।

मनवांचित फल पाती है,

सेवक जन नित सारी॥ जय…

भ्रमर समान श्यामल केशा,

माथे चंद्र सुहाता।

कनक श्रिंगार किए बैठे,

वरदान विट्ठल दाता॥ जय…

भक्तों पर हितकारी माता,

दुख-दारिद्र्य हरनी।

अन्नपूर्णा अन्न देने वाली,

जग कल्याण करनि॥ जय…

🔱 माँ अन्नपूर्णा स्तुति

अन्नपूर्णे सदापूर्णे,

शङ्करप्राणवल्लभे।

ज्ञान-वैराग्य-सिद्ध्यर्थं,

भिक्षां देहि च पार्वति।।

माता च पार्वती देवी,

पिता देवो महेश्वरः।

बान्धवाः शिव-भक्ताश्च,

स्वदेशो भुवनत्रयम्।।

📌 **लाभ:**

ज्ञान, वैराग्य और अन्न की कृपा सदैव बनी रहती है।

📿 **माँ अन्नपूर्णा चालीसा (Annapurna Chalisa)**

॥दोहा॥

जय गिरिराज किशोरी, जय जग जाह्नवी माता।

अन्नपूर्णा जय जगदम्बा, कृपा करो भवदाता॥

अन्नपूर्णा चालीसा :

1️⃣जय अन्नपूर्णे जगत निकेता। अन्नपूर्णाम्ब संचय हेता॥

2️⃣निरधन के तुम हो धनदाता। दुखिनों के मन की तुम त्राता॥

3️⃣काशीपुरी में तुम विराजो। भक्तों के संकट तुम साजो॥

4️⃣शिव की प्राण वल्लभा भवानी। कृपा करो सब पर महारानी॥

5️⃣सिंघासन पर राज तुम्हारा। त्रिलोक में डंका तुम्हारा॥

6️⃣सुन्दर रूप मोहिनी मूरत। करुणा सागर अम्बा सूरति॥

7️⃣हाथों में रत्नजड़ित पात्रा। अन्नपूर्णा अन्न की मात्र॥

8️⃣कर में स्वर्ण करछुल प्यारी। देत अन्न सेवक संसारी॥

9️⃣सुख-संपत्ति, धन-धान्य की दाता। हर लेती हो दीन की व्यथा॥

🔟 जो कोई सच्चे मन से ध्यावे। उसकी मनोकामना पावे॥

11. लौकिक, पारलौकिक दाता। भक्तों के तुम हो रखवाला॥

12. कठिन समय में नाव उतारो। संकट से निज भक्त संवारो॥

13. गृहस्थ जीवन में आनंद भरो। लक्ष्मी संग सुख-शांति करो॥

14. करुणा बरसाइयो जगदम्बा। घर-घर में अन्नपूर्णा अम्मा॥

15. शिव शंकर के प्राण अति प्यारी। त्रिभुवन में महिमा तुम्हारी॥

16. माँ अन्नपूर्णा दीनदयाला। संकट हरने वाली माया॥

17. जो श्रद्धा-भक्ति से गुण गावै। माँ अन्नपूर्णा सुख पावै॥

18. काशी में हो अन्न का दानी। सब तन-मन पालन करवानी॥

19. भक्त तुम्हारा ध्यान लगावें। प्रसाद रूप अन्न पावें॥

20. अन्नपूर्णा माँ की महिमा। तीनों लोक सुनी सबभीं मा॥

॥दोहा॥

अंबे अन्नपूर्णा सुनो, भाव भक्ति की तान।

दरिद्रहि दरिद्र

ता हरौ, दास करे बलिदान॥

📌 **लाभ:**

आर्थिक कष्ट दूर

अन्न-वैभव की प्राप्ति

गृहस्थ सुख की वृद्धि